International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(3): 196-199
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 01-06-2026
Accepted: 24-06-2026
Publish : 26-06-2026

डॉ.नीरज शर्मा
सहायक प्राध्यापक/ प्रभारी प्राचार्य,
शासकीय संस्कृत महाविद्यालय,
देवेन्द्रनगर, पन्ना, म.प्र.

Correspondence:
डॉ.नीरज शर्मा
सहायक प्राध्यापक/ प्रभारी प्राचार्य,
शासकीय संस्कृत महाविद्यालय,
देवेन्द्रनगर, पन्ना, म.प्र.

पाणिनि व्याकरण और ज्योतिष का अन्तःसम्बन्ध

डॉ.नीरज शर्मा

शोध सार (Abstract)

भारतीय मनीषा में कहा गया है: **'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'** और **'ज्योतिषामयनं चक्षुः'**। यदि व्याकरण इस ज्ञान-पुरुष का मुख है, तो ज्योतिष उसके नेत्र हैं। बिना मुख के शब्द की अभिव्यक्ति सम्भव नहीं और बिना नेत्र के काल के स्वरूप को देख पाना असम्भव है।

महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी को प्रायः केवल भाषा का अनुशासन माना जाता है, परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो यह खगोल विज्ञान (Astronomy) की परिभाषाओं का भी मूल है। जब पाणिनि **'नक्षत्रेण युक्तः कालः'** कहते हैं, तो वे केवल प्रत्यय नहीं समझा रहे होते, बल्कि वे उस खगोलीय घटना को व्याकरण से सिद्ध कर रहे होते हैं जिसके आधार पर हमारे महीनों और तिथियों का निर्धारण होता है। यह शोध पत्र इस तथ्य की विवेचना करता है कि किस प्रकार महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी ज्योतिष शास्त्र के तकनीकी शब्दों, काल-गणना और खगोलीय घटनाओं की व्याख्या हेतु आधारभूत ढाँचा प्रदान करती है। "शब्दशास्त्र" और "कालशास्त्र" का यह सङ्गम भारतीय ज्ञान परम्परा की वैज्ञानिकता को सिद्ध करता है।

प्रस्तावना (Introduction)

संस्कृत वाङ्मय में व्याकरण को वेद शरीर का 'मुख' और ज्योतिष को 'नेत्र' माना गया है। बिना मुख (व्याकरण) के स्पष्ट उच्चारण और अर्थबोध सम्भव नहीं है, और बिना नेत्र (ज्योतिष) के काल का ज्ञान सम्भव नहीं।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।।
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते[1] **।।**

भगवान् पाणिनि ने अपने सूत्रों में कई स्थानों पर नक्षत्र, मास, ऋतु और ग्रहों से सम्बन्धित संज्ञाओं का प्रयोग किया है, जो इस बात का प्रमाण है कि व्याकरण, ज्योतिष के सिद्धान्तों को पुष्ट करता है।

संस्कृत वाङ्मय में आचार्य लगध को ज्योतिष शास्त्र का प्रवर्तक माना जाता है ओर यह परम्परा उत्तरोत्तर आचार्यों से पुष्पित एवं पल्लवित हुई है। यद्यपि व्याकरण की धारा में पाणिनि से पूर्व अनेक व्याकरण प्रसिद्ध है-

इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टादिशाब्दिकाः।। कविकल्पद्रुम

तथापि वर्तमान में पाणिनि व्याकरण ही व्याकरण के नाम से प्रसिद्ध तथा उपादेय है।

निश्चितरूप से शरीर के अङ्गों का परस्पर विशिष्ट सम्बन्ध होता है, जैसे मनुष्य शरीर में विद्यमान अङ्गों की अपने कार्य सम्पादन के लिये महती आवश्यकता तो है ही, साथ ही अन्य कार्य साधन में भी

वे सहकारी होते हैं। चिकित्सा क्षेत्र में कान का चिकित्सक नाक और गले का भी जानकार होता है, उसी प्रकार पाचन तन्त्र में आँते,लीवर,अग्न्याशय तथा श्वसन तन्त्र में फेफड़े,नाक, गला एवं मस्तिष्क, रीढ़ की हड्डी आदि की चिकित्सा सहैव की जाती है। इसी प्रकार वेदरूपी शरीर के विभिन्न अङ्गों का भी परस्पर विशिष्ट सम्बन्ध है इसलिये शरीर के सुचारु संचालन के लिये भगवान् भाष्यकार ने वेद का षडङ्ग अध्ययन करने का उपदेश दिया है।

ब्राह्मणेन निष्कारणो षडङ्गो वेदोध्येयो ज्ञेयश्च।(महाभाष्य)

शोध विषय

पाणिनि अष्टाध्यायी के सूत्र जो सीधे तौर पर ज्योतिष शास्त्र (काल-गणना, नक्षत्र और खगोल) से जुड़े हैं उनको दृष्टिगत करके व्याकरण और ज्योतिष के अन्तःसम्बन्ध को निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता है:

पाणिनि सूत्रों का ज्योतिषीय औचित्य

नक्षत्रेण युक्तः कालः[2]- (व्याकरणिक अर्थ) उस नक्षत्र के नाम से युक्त काल (समय) को बताने के लिए 'अण्' आदि प्रत्यय होते हैं।

साऽस्मिन् पौर्णमासीति संज्ञायाम्[3] **-**(व्याकरणिक अर्थ) प्रथमान्त समर्थ सुबन्त (पौर्णमासी संज्ञा होने पर) से मास, अर्धमास,सम्वत्सर का निर्देश करने के लिये अण् प्रत्यय होता है।

साऽस्मिन् पौर्णमासीति (संज्ञायाम्) - इतिशब्दादिति । एतच्च भाष्ये स्थितम् । पौषीति । पुष्येण युक्ता पौषी पौर्णमासी, सा यस्मिन्मासे स पौषो मासः । पौषीशब्दादणियस्येति चेति ईकारलोपः । एवं मघाभिर्युक्ता पौर्णमासी माघी, सा यस्मिन्स माघो मासः । तथा फाल्गुन इत्यादि । संज्ञायां किम् । पौषी पौर्णमासी अस्मिन्पञ्चदशरात्रे[4] **।**

ज्योतिषीय औचित्य- उक्त सूत्रद्वय भारतीय पञ्चाङ्ग के मास (Months) के नामकरण का आधार है। जैसे- जिस पूर्णिमा को चन्द्रमा 'चित्रा' नक्षत्र में होता है, वह मास 'चैत्र' कहलाता है। ज्योतिष का पूरा "चन्द्र-मास" विज्ञान इसी सूत्र पर टिका है।

लुबविशेषे[5] (४.२.४) * (व्याकरणिक अर्थ) यदि नक्षत्र और काल में कोई भेद न करना हो, तो प्रत्यय का लोप हो जाता है।

ज्योतिषीय औचित्य- ज्योतिष में जब हम कहते हैं "आज पुष्य है", तो यहाँ 'पुष्य' नक्षत्र भी है और उस नक्षत्र से युक्त 'काल' भी। व्याकरण यहाँ ज्योतिषीय व्यवहार को संक्षिप्त और सटीक बनाता है।

ज्योतिरायुषि होमः[6] - (व्याकरणिक अर्थ) यह सूत्र 'स' के स्थान पर 'समान' के आदेश और शब्दों की सिद्धि के सन्दर्भ में आता है। यहाँ 'ज्योतिष' शब्द का प्रयोग 'आयु' (जीवन) और 'होम' (यज्ञ) के साथ किया गया है।

ज्योतिषीय औचित्य- यह सूत्र सिद्ध करता है कि 'ज्योतिष' का सीधा सम्बन्ध 'आयु' (Longevity) से है। ज्योतिष शास्त्र का मुख्य प्रयोजन ही जातक की आयु और उसके जीवन चक्र का अध्ययन करना है। पाणिनि ने 'ज्योतिष्' शब्द को 'आयु' के सहचर के रूप में रखकर यह सङ्केत दिया है कि आकाशीय ज्योतिः (ग्रह) मानवीय आयु को प्रभावित करती है।

तारका ज्योतिषि[7] (५.२.३६) (व्याकरणिक अर्थ) 'ज्योतिष' (खगोल/आकाश) के अर्थ में 'तारका' शब्द का प्रयोग होता है। अन्यत्र तारिका । इसी शब्द से 'इतच्' प्रत्यय का प्रयोग कर 'तारकितं नभः' (तारों भरा आकाश) जैसे प्रयोग सिद्ध होते हैं।

ज्योतिषीय औचित्य- ज्योतिष शास्त्र दो भागों में विभक्त है—गणित और फलित। यह सूत्र 'खगोल विज्ञान' (Astronomy) के उस पक्ष को उजागर करता है जहाँ तारों (Stars) की स्थिति का वर्णन है। पाणिनि यहाँ स्पष्ट करते हैं कि जब हम 'ज्योतिष' की बात करते हैं, तो उसका आधार 'तारका' (Fixed Stars/Constellations) ही हैं। बिना नक्षत्रों के ज्योतिष का कोई अस्तित्व नहीं है।

अष्टाध्यायी में पाणिनि ने 'अहोरात्र', 'पक्ष', 'मास', 'ऋतु', और 'सम्वत्सर' जैसे शब्दों के प्रयोग के लिए विशिष्ट नियम दिए हैं। ज्योतिष में 'लग्नादि' भावों की सिद्धि के लिए इन शब्दों का शुद्ध होना अनिवार्य है।

कालाठञ्[8] (व्याकरणिक अर्थ) कालवाची प्रातिपदिकों (शब्दों) से शैषिक अर्थों में 'ठञ्' प्रत्यय होता है।

ज्योतिषीय औचित्य- यह सूत्र ज्योतिषीय गणना में समय के विशेष खण्डों को विशेषण प्रदान करता है। उदाहरण के लिए:

***मासिकम्-** एक मास में होने वाला (Monthly event/transition)।

* **सांवत्सरिकम्-** एक वर्ष में होने वाली खगोलीय घटना (Annual celestial event)।

सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रभ्योऽण्[9] - (व्याकरणिक अर्थ) काल अर्थ को बताने हेतु सन्धिवेलादि,ऋतुवाचियों, नक्षत्र वाचियों से शेष अर्थ में अण् प्रत्यय होता है।

ज्योतिषीय औचित्य- उपरोक्त से निष्पन्न शब्द जैसे – सान्धिवेलम्, सान्ध्यम्, गैष्मम्, शैशिरम्, पौषम् आदि का ज्योतिष के अनुसार तत्तत्कालीन ग्रह गोचरों, ग्रहणों, पर्वों के लिये शब्द प्रयोगों का वास्तविक अर्थ समझते हैं। जैसे साम्वत्सरिक शब्द का अर्थ सम्वत्सर (वर्ष) में होने वाली खगोलीय घटना। यदि उस वर्ष के फल या पर्व को बताना होगा तो साम्वत्सरं प्रयोग करना होगा। **सम्वत्सरात् फलपर्वणोः(गणसूत्र 102) साम्वत्सरं फलं पर्व वा।**

ज्योतिष में जब हम किसी ग्रह के 'गोचर' की अवधि की बात करते हैं, तो उस कालखण्ड की शुद्धि इसी सूत्र से होती है।

सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ च[10] (व्याकरणिक अर्थ) सायम् (शाम), चिरम् (देर तक), प्राह्णे (पूर्वाह्न), प्रगे (प्रातःकाल) – इन अव्यय शब्दों से 'ट्यु' और 'ट्युल्' प्रत्यय होते हैं।

ज्योतिषीय औचित्य- ज्योतिष शास्त्र में 'मुहूर्त' चयन के लिए दिन को पाँच भागों में बाँटा गया है (प्रातः, पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न)।

* सायन्तनम्: सायंकाल से संबंधित (संध्या वन्दन या प्रदोष काल)।
* प्राह्णेतनम्: दिन के प्रथम भाग से संबंधित।
* यह सूत्र स्पष्ट करता है कि पाणिनि काल के उन सूक्ष्म विभाजनों के प्रति सजग थे जिनका उपयोग ज्योतिष में 'शुभ मुहूर्त' और 'होरा' देखने के लिए किया जाता है।

श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषाढाबहुलाल्लुक्[11] - (व्याकरणिक अर्थ) इन नक्षत्रों वाचक शब्दों से जात अर्थ में आये प्रत्यय का लुक् होता है।>

ज्योतिषीय औचित्य- पाणिनि ने 'धनिष्ठा' नक्षत्र के लिए 'श्रविष्ठा' शब्द का प्रयोग किया है। प्राचीन 'वेदाङ्ग ज्योतिष' में भी श्रविष्ठा ही मिलता है। यह पाणिनि के ज्योतिषीय ज्ञान की प्राचीनता और वैदिक ज्योतिष से उनके जुड़ाव को सिद्ध करता है। इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक (वस्तु)का नाम श्रविष्ठः,फल्गुनः,अनुराधः,स्वातिः तिष्यः पुनर्वसुः, हस्तः, विशाखः, अषाढः, भी रख सकते हैं।

पाणिनि का काल-दर्शन केवल वाक्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह खगोलीय समय (Astronomical Time) की वैज्ञानिक व्याख्या है। अद्यतन और अनद्यतन के भेद यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय मनीषा समय को एक 'रेखीय' (Linear) प्रवाह में नहीं, बल्कि 'वृत्तीय' और 'विभक्त' (Cyclical and Segmented) प्रवाह में देखती थी, जैसा कि ज्योतिष के चक्रों में देखा जाता है। अतः एक ज्योतिषी को 'फलित' कहने से पूर्व पाणिनि के 'लकार' विधान का ज्ञान होना अनिवार्य है, ताकि वह सटीक बता सके कि फल 'आज' मिलेगा या 'अनद्यतन' भविष्य में।"

पाणिनि का 'लकार' (Tense) विधान पूरी तरह से ज्योतिषीय काल-विभाजन पर आधारित है। ज्योतिष में 'दशा-क्रम' और 'गोचर' का फलित भविष्य, वर्तमान और भूत के सूक्ष्म भेदों पर टिका होता है। पाणिनि ने केवल तीन काल (भूत, भविष्य, वर्तमान) नहीं माने, वरन् उनके अवान्तर अद्यतन (Today's) और अनद्यतन (Not of today) जैसे सूक्ष्म भेद किए हैं, जो ज्योतिषीय फलादेश में 'तात्कालिकता' को दर्शाते हैं।

वर्तमान काल और उसका औचित्य

वर्त्तमाने लट्[12] **-**

ज्योतिषीय औचित्य- यह 'तत्काल' के गोचर को दर्शाता है। ज्योतिष में 'तात्कालिक मैत्री' या 'प्रश्न कुण्डली' इसी वर्तमान क्षण पर आधारित होती है। जो ग्रह अभी जिस राशि में है, वह 'लट्' (वर्तमान) की स्थिति है।

२. भविष्य के भेद: अद्यतन और अनद्यतन

पाणिनि ने भविष्य को दो भागों में बाँटा है, जो ज्योतिष के 'अल्पकालिक' और 'दीर्घकालिक' फलित के समान है:

लृट् शेषे च[13] — यह सामान्य भविष्यफल है।

अनद्यतने लुट्[14] — जो 'आज'(व्यतीत रात्रि के 12 बजे के बाद से आगामिनी रात्रि के 12 बजे तक) के बाद होने वाला है।

ज्योतिषीय औचित्य- दशा विचार में जब हम कहते हैं कि "अगले महीने से गुरु की महादशा लगेगी", तो वह अनद्यतन भविष्य (लुट्) है। ज्योतिष की गणना यह स्पष्ट करती है कि फलित कब घटित होगा, और व्याकरण उसे 'लकार' के माध्यम से निश्चितता प्रदान करता है।

३. भूतकाल के भेद और परोक्ष अनुभूति

परोक्षे लिट्[15] - (व्याकरणिक अर्थ) ऐसी घटना जो आँखों के सामने न हुई हो और बहुत पुरानी (परोक्ष) हो।

ज्योतिषीय औचित्य- यह ज्योतिष के 'पुराण' और 'ऐतिहासिक खगोल विज्ञान' से जुड़ा है। जैसे "सतयुग में ग्रह ऐसे थे" (परोक्ष भूत)।

अनद्यतने लङ्[16] — जो आज का भूतकाल नहीं है। ज्योतिष में व्यतीत हुई दशाओं का विश्लेषण इसी श्रेणी में आता है।

४. काल-विभाजन तुलनात्मक तालिका (Grammar vs Astrology)

पाणिनि लकार	काल स्वरूप	ज्योतिषीय औचित्य
लट् (Present)	वर्तमान	प्रश्न कुण्डली, वर्तमान गोचर
लुट् (Periphrastic Future)	अनद्यतन भविष्य	दीर्घकालिक महादशा फल (Long-term forecast)
लृट् (Simple Future)	सामान्य भविष्य	गोचर का आने वाला प्रभाव
लिट् (Perfect Past)	परोक्ष भूत	प्राचीन खगोलीय गणनाएँ, ऐतिहासिक ग्रहण
लङ् (Imperfect Past)	अनद्यतन भूत	जातक का बीता हुआ समय (Past Life/Events)

ग्रहों और दिशाओं का ज्ञान

अष्टाध्यायी में 'दिक्' (दिशा) वाचक शब्दों की सिद्धि के लिए पृथक सूत्र हैं, जो ज्योतिष के 'दिग्बल' और 'वास्तु' विवेचन में रीढ़ की हड्डी का कार्य करते हैं।

व्याकरण और खगोल विज्ञान

ज्योतिष शास्त्र गणना प्रधान है। पाणिनि के प्रत्याहार सूत्र और अनुवृत्ति की प्रक्रिया आधुनिक कम्प्यूटर एल्गोरिदम जैसी है।

ज्योतिष में ग्रहों की 'गति' और व्याकरण में धातुओं की 'गति' दोनों ही परिवर्तनशीलता के नियम पर आधारित हैं।

पारिभाषिक शब्दावली- ज्योतिष के 'तिथ्यादि' पंचांग के अंगों की व्याकरणिक शुद्धि के बिना फलित ज्योतिष का अर्थ अनर्थ हो सकता है।

गणितीय सटीकता- जैसे पाणिनि ने सूत्रों में "लाघव" (संक्षिप्तता) को महत्त्व दिया, वैसे ही ज्योतिष में "बीजगणित" और "त्रिकोणमिति" का प्रयोग संक्षेप में गणना के लिए होता है।

वेदाङ्ग एकता- व्याकरण (मुख) के बिना ज्योतिष (नेत्र) अपनी बात कह नहीं सकता। किसी जातक की कुंडली का विश्लेषण करते समय 'संज्ञाओं' का सही बोध पाणिनि ही कराते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

आज का 'कैलेण्डर' केवल संख्या है, जबकि पाणिनि का व्याकरण 'आकाश' को शब्दों में उतारता **है। "व्याकरण और ज्योतिष का सम्बन्ध वैसा ही है जैसा वाणी और विचार का है।"**

अतः यह स्पष्ट है कि पाणिनि व्याकरण केवल साहित्य के लिए नहीं, बल्कि ज्योतिष जैसे वैज्ञानिक विषयों की अभिव्यक्ति का भी माध्यम है। पाणिनि के सूत्रों के बिना ज्योतिषीय पारिभाषिक शब्दावली की व्याख्या असम्भव है। व्याकरण 'संस्कार' देता है और ज्योतिष 'प्रकाश'। इन दोनों का समन्वय ही सत्य ज्ञान की प्राप्ति कराता है।

अतः यह निश्चित है कि पाणिनीय व्याकरण केवल भाषा का संस्कार नहीं करता, बल्कि वह ज्योतिष के 'काल-पुरुष' का मुख है। 'ज्योतिरायुषि होमः' से लेकर 'कालाठञ्' तक के सूत्र यह सिद्ध करते हैं कि व्याकरण के बिना ज्योतिष की व्याख्या अपूर्ण है और ज्योतिष के बिना व्याकरण का 'काल-बोध' केवल सैद्धान्तिक है। दोनों का समन्वय ही भारतीय ज्ञान परम्परा की वैज्ञानिक पराकाष्ठा है। अतः यह सिद्ध होता है कि पाणिनि व्याकरण केवल भाषा का अनुशासन नहीं, बल्कि ज्योतिष जैसे वैज्ञानिक विषयों की अभिव्यक्ति का अनिवार्य माध्यम है। 'ज्योतिरायुषि होमः' से लेकर 'अनद्यतन' के भेदों तक, पाणिनि ने वह भाषाई ढाँचा तैयार किया है जिसके बिना ज्योतिष का 'काल-पुरुष' निराकार रहता।

"निष्कर्षतः, पाणिनि की अष्टाध्यायी केवल शब्दों का कोष नहीं है, बल्कि यह वह प्रकाश है जो ज्योतिष के 'काल-पुरुष' को रूप प्रदान करता है। जहाँ 'तारका ज्योतिषि' आकाश के भौतिक स्वरूप को सिद्ध करता है, वहीं 'लुट्' और 'लृट्' जैसे लकार भविष्य की अदृश्य घटनाओं को व्याकरणिक मर्यादा देते हैं।

अतः, पाणिनि व्याकरण और ज्योतिष शास्त्र का सम्बन्ध 'बीज और वृक्ष' के समान है। व्याकरण वह बीज है जिससे ज्योतिष रूपी विशाल वृक्ष के सिद्धान्तों का प्रस्फुटन होता है।"

यह शोध पत्र सिद्ध करता है कि व्याकरण के सूत्र किस प्रकार ज्योतिष के गणित और फलित दोनों पक्षों को प्रमाणित करते हैं। अलं विस्तरेण।।

सन्दर्भ

1. पाणिनीयशिक्षा 41-42
2. पाणिनि अष्टाध्यायी 4.2.3
3. पाणिनि अष्टाध्यायी 4.2.21
4. उक्त सूत्र की बालमनोरमा टीका
5. पाणिनि अष्टाध्यायी 4.2.4
6. पाणिनि अष्टाध्यायी 6.3.85
7. पाणिनि अष्टाध्यायी 5.2.36
8. पाणिनि अष्टाध्यायी 4.3.11
9. पाणिनि अष्टाध्यायी 4.3.16
10. पाणिनि अष्टाध्यायी 4.3.23
11. पाणिनि अष्टाध्यायी 4.3.34
12. पाणिनि अष्टाध्यायी 3.2.123
13. पाणिनि अष्टाध्यायी 3.3.13
14. पाणिनि अष्टाध्यायी 3.3.15
15. पाणिनि अष्टाध्यायी 3.2.115
16. पाणिनि अष्टाध्यायी 3.2.111